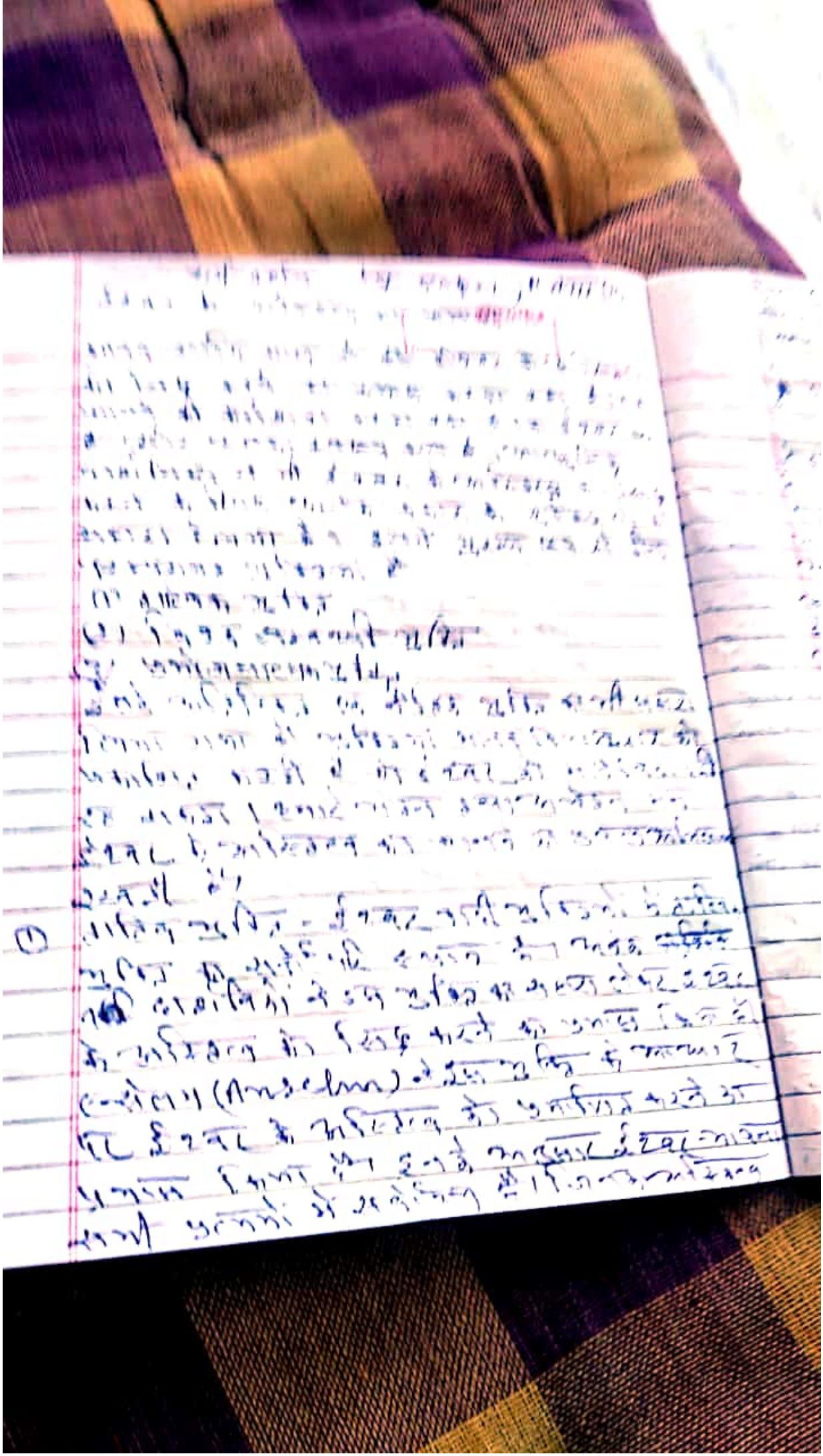

Scanned with CamScanner

[illegible] मात्र [illegible] आवश्यक नहीं करता ईश्वर [illegible]
[illegible] अतः ईश्वर [illegible]
[illegible] से मानना [illegible]

(2) विश्व सम्बन्धी युक्ति – परम्परागत युक्तियों में विश्व सम्बन्धी युक्ति का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए विश्व के अस्तित्व की व्याख्या से शुरुआत की है।
Cosmos का अर्थ विश्व होता है और इसलिए इसे Cosmological argument कहते हैं। विश्व सम्बन्धी युक्ति का [illegible] इसका प्रयोग Plato प्रमाण है। संसार आनुभविक है। आनुभविक उसे कहा जाता है जिसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं हो। विश्व आश्रित है क्योंकि यहाँ की हर चीज़ें अनित्य हैं। उनका नाश होता है। ऐसे विश्व की व्याख्या के लिए [illegible] मानना ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना है, जो आवश्यक, स्वतंत्र तथा वास्तविक है।
प्रो० गैलवे ने इस युक्ति को इस प्रकार कहा है –
"विश्व आकस्मिक है अथवा इसकी तात्कालिक अनुभूति [illegible] विश्व आनुभविक है इस लिए एक सर्वोच्च आवश्यक प्राणी की सत्ता है।"
विश्व सम्बन्धी युक्ति का दूसरा नाम कारण युक्ति है। इसके अनुसार एक कार्य के कार्य होने से कारण का होना अवश्य होगा। सभी कार्यों का एक कारण होता है और यहाँ विश्व-सम्बन्धी कार्य का कारण ईश्वर है। [illegible] भी इस बात की पुष्टि की है और कहा कि विश्व कार्य है ईश्वर विश्वरूपी कार्य का कारण है। विश्व सम्बन्धी युक्ति को कार्य-कारण युक्ति भी

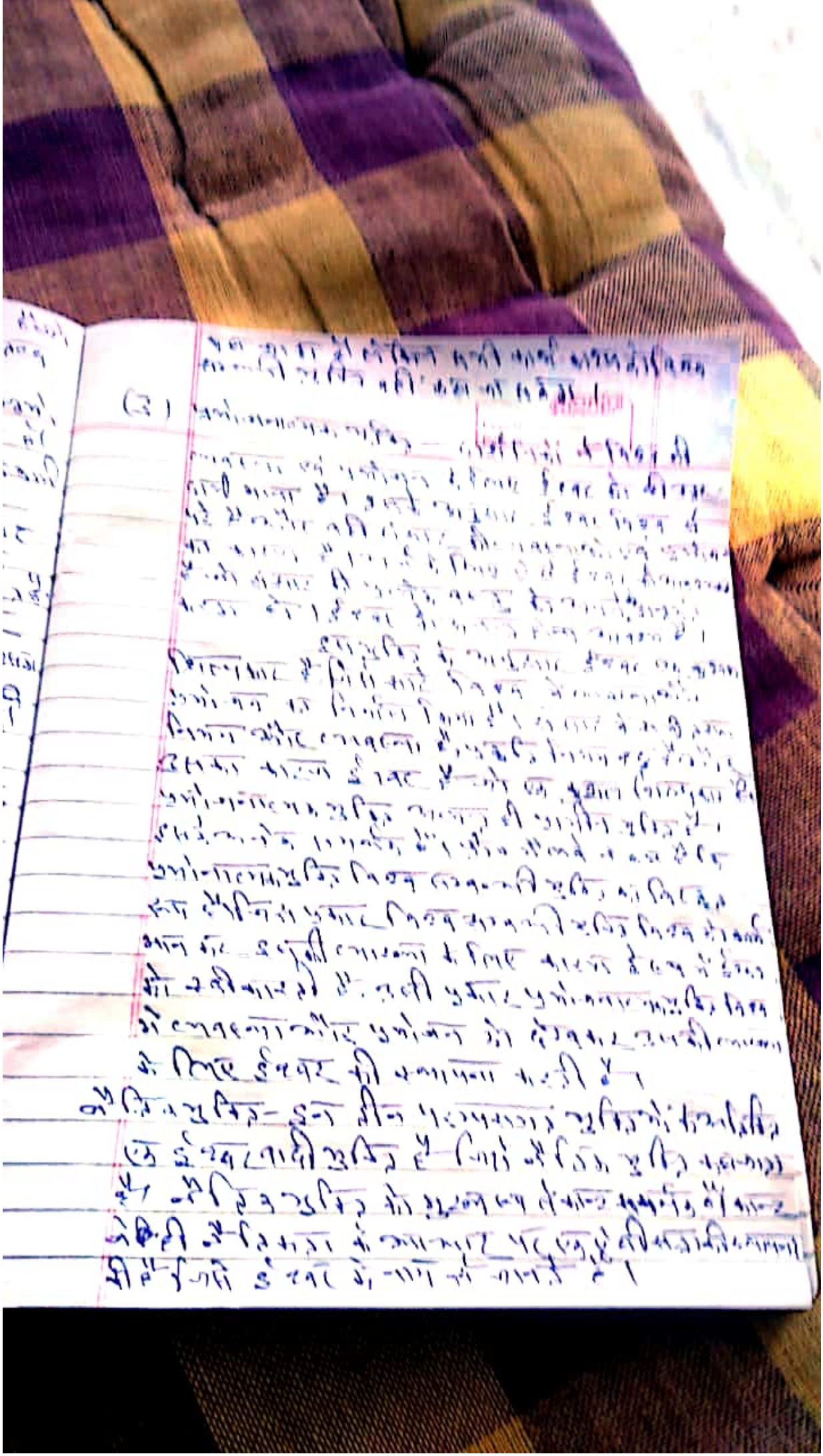

Scanned with CamScanner

विराट और वास्तविक दोनों में है। अब अगर
सीमित से उत्पन्न हुए मैं निश्चय अधिक श्रेष्ठ
विचारों में है। अतः ईश्वर सर्वोत्तम होने के
कारण विचार और वास्तविक दोनों में ही
अस्तित्व ईश्वर ज्ञान में पड़ा जाता है।

आधुनिक युग के दार्शनिकों में देकार्त (Descartes)
ने इस युक्ति के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व
को सिद्ध करने का प्रयास किया है। देकार्त
के मत के अनुसार ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न
अनंत प्रत्यय माना जाता है जो पूर्णता, सर्वशक्ति
अनन्त एवं ऐसी सत्ता की भावना और पूर्ण एवं
अनन्त है। ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है जिसमें वास्तविक
है अतः इसका अर्थ यह हुआ कि वास्तविक अस्तित्व
अस्तित्व सत्ता का प्रत्यय सम्मिलित रहता ही होगी
अतः ईश्वर की सत्ता आंतरिक रूप से प्रमाणित
हो जाती है।

देकार्त ने तात्विक युक्ति को एक उदाहरण के द्वारा प्रमाणित
किया है। देकार्त के अनुसार जिस प्रकार हम एक त्रिभुज
की कल्पना करते हैं तो कल्पना में ही निहित है कि इस
त्रिभुज की तीन भुजाएं हैं - तथा उसके तीनों कोणों
का योग दो समकोण के बराबर होता है। ठीक
उसी प्रकार यदि हमारे मन में ईश्वर की एक
भावना है तो इस भावना के अन्तर्गत ही ईश्वर
का अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है।

काण्ट ने
देकार्त के तात्विक युक्ति का इस प्रकार खण्डन किया है
मोटी बुद्धि पूर्ण, अनन्त ईश्वर का विचार है इस
एक अपूर्ण जीव ही और पूर्ण और अनन्त ईश्वर के
विचार का कारण नहीं हो सकते। अतः इस विचार